शोधकर्ताओं ने एक नए रेडियोधर्मी तत्व कैलिफोर्नियम की खोज की

1950 में आज ही कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने एक नए रेडियोधर्मी तत्व कैलिफोर्नियम (तत्व 98) की खोज की थी। इसे 60 इंच के साइक्लोट्रान में क्यूरियम-242 पर हीलियम आयनों की बौछार करके बनाया गया था। कैंसर के इलाज में कैलिफोर्नियम का उपयोग किया जाता है।

आइंस्टीन ने क्वांटम सिद्धांत पर अपना पहला शोध पत्र पूरा किया

1905 में आज ही विज्ञानी अल्बर्ट आइंस्टीन ने क्वांटम सिद्धांत पर अपना पहला महत्वपूर्ण शोध पत्र पूरा किया था। इस पत्र में उन्होंने प्रस्तावित किया कि प्रकाश न केवल तरंग के रूप में, बल्कि ऊर्जा के छोटे पैकेटों (फोटान) के रूप में यात्रा करता है। इसके लिए आइंस्टीन को बाद में नोबेल मिला था।

बैडमिंटन में ओलिंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय हैं साइना नेहवाल

बैडमिंटन खिलाड़ी साइना नेहवाल का जन्म 1990 में आज ही हिसार में हुआ था। 2008 में बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप जीतीं। इसी वर्ष बीजिंग ओलिंपिक में देश का प्रतिनिधित्व किया और क्वार्टर फाइनल तक पहुंचीं। 2012 के लंदन ओलिंपिक में बैडमिंटन में पदक (कांस्य) जीतने वाली पहली भारतीय बनकर इतिहास रच दिया। 2015 में वह विश्व नंबर 1 रैंकिंग हासिल करने वाली पहली भारतीय महिला बैडमिंटन खिलाड़ी बनीं। अपने पूरे करियर के दौरान, उन्होंने 24 से अधिक अंतरराष्ट्रीय खिताब जीते, जिनमें 11 बीडब्ल्यूएफ सुपरसीरीज खिताब शामिल हैं। 2016 में उन्हें पद्मभूषण मिला।

इधर-उधर की

पत्नी ने प्रेमिका को दिया पति को लीज पर लेने का प्रस्ताव

85,000 रुपये प्रति माह तय किया किराया ● ब्यूरो

बैंकाक, एजेंसी : थाईलैंड में अनिल कपूर के जुदाई फिल्म से मिलता जुलता वाकया सामने आया है। यहां एक पत्नी ने अपने बेवफा पति को तलाक देने के बजाय उसकी प्रेमिका को 30,000 बहत (85,000 रुपये) प्रति माह के किराए पर देने का प्रस्ताव रखा है। खुन क्वांग ने बताया कि उसके पति का लंबे समय से किसी अन्य महिला के साथ अफेयर चल रहा था। एक बार रंगे हाथों पकड़े जाने के बाद पति ने खुन से माफी मांगी, लेकिन कुछ दिन बाद वह फिर प्रेमिका से मिलने लगा। पति ने पत्नी को बताया कि प्रेमिका ने संबंध तोड़ने से इन्कार कर दिया है और वह संबंध तोड़ने पर खुद को नुकसान पहुंचाने की धमकी दे रही है। इसके बाद खुन ने प्रेमिका के सामने असामान्य प्रस्ताव रखा कि प्रेमिका उसके पति के साथ रह सकती है, बशर्ते वह हर महीने उसे 30,000 बाट दे। प्रेमिका राजी भी हो गई। मामला कोर्ट पहुंचा। हालांकि कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इस तरह के पति-लीज समझौते का कोई कानूनी आधार नहीं है।

उत्पादों के शुद्ध-मिलावटी होने की जानकारी देगी 'डिजिटल नाक'

नईदुनिया विशेष
एआइ इंपैक्ट

बीएयू ने तैयार की मशीन की डिजाइन, सुगंध व रासायनिक से होगी पहचान, जीआइ उत्पादों की विश्वसनीयता होगी मजबूत

ललन तिवारी ● नईदुनिया

भागलपुर : देश में मिलावटी खाद्य पदार्थों का मिलना बड़ी समस्या है। आम, लीची, मसाले और अन्य कृषि उत्पादों के नाम पर अक्सर उपभोक्ताओं को कम गुणवत्ता या मिलावटी उत्पाद बेचे जाते हैं। खासकर जीआइ टैग वाले उत्पादों में मिलावट बाजार में आसानी से की जाती है, जिससे किसानों और उपभोक्ताओं दोनों को नुकसान होता है। इस चुनौती से निपटने को बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू), सबौर के विज्ञानियों ने मशीन की डिजाइन विकसित की है। एआइ व सेंसर आधारित यह मशीन किसी कृषि उत्पाद के सुगंध और रासायनिक संकेतों का विश्लेषण कर बता देगी कि वह शुद्ध है या मिलावटी।

बीएयू ने इस मशीन की डिजाइन का पेटेंट करा लिया है। इसे डायनेमिक जीआइ फ्लेवर प्रोफाइलिंग ट्रेसबिलिटी डिवाइस नाम दिया गया है। इसे सी-डैक (सेंटर फार डेवलपमेंट आफ एडवांस्ड कंप्यूटिंग) के सहयोग से विकसित किया गया है। इसका उपयोग व्यावसायिक तथा व्यक्तिगत दोनों स्तरों पर किया जा सकेगा। खेतों, मंडियों, गोदामों, निर्यात केंद्रों पर इस पोर्टेबल मशीन का इस्तेमाल आसानी से हो सकेगा। इसका लाभ उन भारतीय निर्यातकों को मिल सकेगा, जिनके उत्पादों को प्रायः कम गुणवत्ता का बताकर खरीदने में आना-कानी की जाती है। इस मशीन के जरिये जब उनको अपने उत्पाद की गुणवत्ता की जानकारी होगी, तो वह इसके बारे में बता सकेंगे। इससे भारतीय कृषि उत्पादों की पहचान वैश्विक बाजार में मजबूत हो सकेगी और विश्वसनीयता बढ़ने की संभावनाएं भी बढ़ेंगी। किसान भी अपने उत्पाद की वैज्ञानिक ग्रेडिंग व प्रमाणन कर सकेंगे, जिससे उन्हें उत्पाद की बेहतर कीमत मिल सकेगी। उपभोक्ताओं को भी प्रमाणित और गुणवत्तापूर्ण उत्पाद मिल सकेंगे।

लैब में मशीन के डिजाइन पर कार्य करते विज्ञानी ● ब्यूरो

किसानों को होंगे ये फायदे

- उत्पाद की वैज्ञानिक ग्रेडिंग संभव
- बाजार में भरोसा बढ़ेगा
- निर्यात के अवसर बढ़ेंगे
- कीमत बढ़ने से किसानों की आय में वृद्धि होगी

यह तकनीक बिहार के जीआइ उत्पादों की विशिष्ट पहचान की रक्षा करते हुए उन्हें राष्ट्रीय और वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक होगी। यह तकनीक जीआइ उत्पादों के लिए गुणवत्ता प्रमाणीकरण, फ्लेवर प्रोफाइलिंग और ट्रेसबिलिटी प्रणाली को मजबूत बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

डा. डीआर सिंह, कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर

विस्तार से पढ़ने के लिए स्कैन करें।

डिजाइन तैयार करने में इन विज्ञानियों का योगदान

मशीन का डिजाइन तैयार करने में डा. आदित्य सिन्हा, डा. मो. शमशेर अहमद, डा. अभिजीत घटक, डा. मुकेश कुमार सिन्हा, डा. श्वेता शंभवी, डा. दीपक कुमार पटेल, डा. कीर्ति, डा. अजय कुमार साह, डा. अनिल कुमार तथा कुलपति डा. दुनिया राम सिंह शामिल हैं। डिजाइन स्वीकृत मिल चुकी है व निर्माण की प्रक्रिया पर कार्य चल रहा है।

ऐसे काम करती है मशीन

प्रत्येक कृषि उत्पाद की अपनी विशिष्ट सुगंध और रासायनिक संरचना होती है। मशीन में लगे सेंसर फल या मसाले से निकलने वाले वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (वीओसी) को पहचानते हैं। डिवाइस में पहले से असली उत्पादों का डाटा दर्ज रहेगा। ऐसे में जांच के लिए उस उत्पाद का नमूना मशीन के सामने रखते ही सेंसर उसकी विशेषताओं की तुलना उस डाटा से करता है, उसे शुद्ध या मिलावटी उत्पाद घोषित कर देता है।

कुछ ऐसा होगा उपकरण।

उत्पादों की आसानी से जांची जा सकेगी गुणवत्ता : इस तकनीक की मदद से जर्दालु आम, शाही लीची और कतरनी चावल जैसे जीआइ टैग वाले उत्पादों की पहचान को वैज्ञानिक आधार मिलेगा। भविष्य में इस तकनीक का उपयोग मसाला उद्योग, फल निर्यात, चाय-काफी, खाद्य प्रसंस्करण और गुणवत्ता परीक्षण प्रयोगशालाओं में भी किया जा सकता है।

पूर्व सेना प्रमुख पर डीपफेक वीडियो के बारे में चेताया

नई दिल्ली, एजेंसी : प्रेस सूचना ब्यूरो की फैक्ट चेक यूनिट ने सोमवार को पूर्व सेना प्रमुख मनोज पांडे के एक एआइ-जनित डीपफेक वीडियो के बारे में चेतावनी जारी की है। भारतीय सेना के बारे में भ्रामक दावों को पाकिस्तानी प्रोपगेंडा एकाउंट से आनलाइन प्रसारित किया जा रहा है। पीआइबी फैक्ट चेक यूनिट ने कहा कि यह संपादित वीडियो जनरल मनोज पांडे (सेवानिवृत्त) को भारतीय सेना के कार्य और आचरण के बारे में विवादास्पद टिप्पणियां करते हुए प्रस्तुत करता है। प्रेस सूचना ब्यूरो फैक्ट चेक ने स्पष्ट किया कि पूर्व सेना प्रमुख ने ऐसा कोई बयान नहीं दिया है। पाक प्रोपगेंडा एकाउंट से एक डिजिटल रूप से संपादित वीडियो प्रसारित किया जा रहा है, जिसमें पूर्व सेना प्रमुख जनरल मनोज पांडे को सेना के बारे में झूठे बयान देते हुए दिखाया गया। संपादित क्लिप में पूर्व सेना प्रमुख यह आरोप लगाते दिखते हैं कि इजरायल का समर्थन करने से भारतीय सेना को नुकसान हुआ है। झूठा दावा किया गया कि इजरायली प्रशिक्षक भारतीय सेना के कर्मियों को अमानवीयता के लिए प्रशिक्षित कर रहे हैं।

'ईरान पर हमला नहीं करते तो वहां की सरकार अरब क्षेत्र में अस्थिरता फैलाने को तैयारी थी'

महासंग्राम ● इजरायली राजदूत रुवेन अजार ने कहा, यह स्थिति भारत के हितों को नुकसान पहुंचाती

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली : नई दिल्ली में इजरायल के राजदूत रुवेन अजार ने कहा है कि ईरान के खिलाफ मौजूदा सैन्य कार्रवाई केवल इजरायल की सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र और वैश्विक व्यापार के लिए जरूरी थी। उनका दावा है कि यदि अभी कार्रवाई नहीं की जाती तो आने वाले वर्षों में ईरान ऐसे कदम उठा सकता था जिससे भारत समेत कई देशों के दीर्घकालिक हित प्रभावित होते। उन्होंने कहा कि ईरान की योजना वर्ष 2027 तक इजरायल पर बड़ा हमला करने की थी और वह खाड़ी तथा अरब देशों के मौजूदा ढांचे को भी अस्थिर कर क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाने की रणनीति बना रहा था। 'यदि ऐसा होता तो खाड़ी देशों में काम कर रहे लाखों भारतीयों और भारत के इन देशों के साथ मजबूत आर्थिक संबंधों पर गंभीर असर पड़ सकता था।'

मीडिया से बात करते हुए अजार ने कहा, 'कल्पना कीजिए कि यदि ईरान के पास परमाणु हथियारों का जखीरा होता तो वह क्या कर सकता था। हमने देखा है कि उसने अपने पड़ोसी देशों पर किस तरह हमले किए हैं। यदि अमेरिका और इजरायल ने अभी कार्रवाई नहीं की होती तो भविष्य में स्थिति कहीं अधिक गंभीर हो सकती थी।'

भारत में इजरायली राजदूत रुवेन अजार ● इंटरनेट मीडिया

उन्होंने कहा कि मौजूदा कदम केवल अमेरिका और इजरायल के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व और पश्चिम एशिया के साथ व्यापार करने वाले देशों के लिए भी महत्वपूर्ण है। अजार के अनुसार, यह खाड़ी में रहने वाले लाखों भारतीयों के लिए भी अच्छी खबर है, जो लंबे समय से ईरान से पैदा होने वाले खतरे की छाया में रह रहे थे।

इजरायली राजदूत ने कहा कि सैन्य कार्रवाई के बाद कूटनीति के लिए भी रास्ता खुला रहना चाहिए।

नुकसान की पाई-पाई दुश्मन से वसूलेंगे : खामेनेई

नईदुनिया न्यूज नेटवर्क, नई दिल्ली : ईरान के सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई ने एक बार फिर कहा है हमें हुए नुकसान की पाई-पाई की भरपाई दुश्मन से कराई जाएगी। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने दावा किया कि ईरान शांतिवार्ता के लिए छटपटा रहा है और ये युद्ध ज्यादा से ज्यादा एक हफ्ते में खत्म हो सकता है। वहीं, ईरान ने साफ कर दिया है कि अमेरिका को इस मुगालते में नहीं रहना चाहिए और जब तक संभव हो सकेगा, लड़ाई लड़ी जाएगी। आइएएनएस के अनुसार, ईरान के सुप्रीम लीडर के आधिकारिक टेलीग्राम संदेश में कहा गया कि यदि विरोधी पक्ष क्षतिपूर्ति देने से इन्कार करता है तो ईरान उसकी उतनी संपत्ति अपने नियंत्रण में लेगा, जितनी वह उचित समझेगा, और यदि यह संभव नहीं हुआ तो बराबर नुकसान पहुंचाया जाएगा। इससे पहले देश के नाम अपने पहले संदेश में मोजतबा ने देश में प्रतिरोध जारी रखने का आह्वान किया था और कहा था कि होर्मुज जलमार्ग को दुश्मन के लिए बंद रखने की रणनीति कायम रहेगी।

मोजतबा खामेनेई ● इंटरनेट मीडिया

ट्रंप बोले- किससे करें बात, ईरानी नेताओं का पता ही नहीं : अमेरिका और ईरान के नेताओं के बीच सोमवार को जुबानी जंग और तेज हो गई। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि उनका मानना है कि ईरान अमेरिका से युद्धविराम पर बात करना चाहता है। हमारे लोग भी बातचीत करना चाहते हैं, लेकिन किससे करें, कुछ पता ही नहीं चल रहा। अयातुल्ला खामेनेई की जगह देश के नए सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई को लेकर ट्रंप ने कहा कि तमाम लोग कह रहे हैं कि वह हमले में बुरी तरह घायल हैं।

अनुसंधान

टाइप-2 डायबिटीज पीड़ितों के लिए डिमेंशिया खतरनाक

एक शोध में सामने आया है कि टाइप-2 डायबिटीज से पीड़ित लोगों में हृदय रोग से होने वाली मृत्यु दर में कमी आ रही है, जबकि डिमेंशिया से होने वाली मृत्यु दर बढ़ रही है। यह शोध द लैंसेट डायबिटीज एंड एंडोक्रिनोलाजी में प्रकाशित किया गया है। शोध में बताया गया है कि नई डायबिटीज की दवाएं, जिनमें एली लिली की ट्रूलिसिटी या मौनजारो व नोवो नार्डिस्क की विक्टोजा या ओजेपिंक जैसी जीएलपी-1 दवाएं व बोहिंगर इंगेलहाइम की जार्डियंस व एस्ट्राजेनेका की फारक्सिगा जैसी एसजीएलटी-2 अवरोधक दवाएं शामिल हैं, ब्लड शुगर नियंत्रण के साथ हृदय की सुरक्षा भी प्रदान करती हैं। शोधकर्ताओं ने कहा कि हालांकि इन दवाओं व व्यक्तिगत इलाज लक्ष्यों के माध्यम से डायबिटीज की हृदय संबंधी जटिलताओं का तेजी से समाधान किया जा रहा है, पर नई चिकित्सा पद्धतियों को मस्तिष्क की सुरक्षा के लिए डिजाइन नहीं किया है। (रायटर)

साहित्य अकादमी ने 24 भाषाओं के लिए घोषित किए वर्ष 2025 के पुरस्कार

'जीते जी इलाहाबाद' के लिए ममता कालिया को मिलेगा साहित्य अकादमी पुरस्कार

नई दिल्ली, एजेंसी : भारतीय साहित्य की गौरवशाली संस्था साहित्य अकादमी ने सोमवार को वर्ष 2025 के लिए अपने वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा कर दी है, जिसमें 24 भारतीय भाषाओं के मूर्धन्य रचनाकारों के नामों पर मुहर लगाई गई है। अंग्रेजी लेखक नवतेज सरना और हिंदी लेखिका ममता कालिया उन 24 लेखकों में शामिल हैं, जिन्हें 2025 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

शब्द-शिल्पियों का महाकुंभ और सम्मान की गूंज : इस वर्ष के पुरस्कारों में विधाओं की विविधता और अनुभवों की गहराई का अनूठा संगम देखने को मिला है। जहां अंग्रेजी साहित्य के लिए पूर्व राजदूत और प्रख्यात लेखक नवतेज सरना को उनके कालजयी उपन्यास 'क्रिमसन स्प्रिंग' के लिए चुना गया है, वहीं हिंदी साहित्य की वरिष्ठ हस्ताक्षर ममता कालिया को उनके संस्मरण 'जीते जी इलाहाबाद' के लिए इस प्रतिष्ठित सम्मान से नवाजा जाएगा।

अकादमी द्वारा जारी आधिकारिक वक्तव्य के अनुसार, इस बार आठ कविता संग्रह, चार उपन्यास, छह कहानी संग्रह, दो निबंध, एक साहित्यिक आलोचना, एक आत्मकथा और दो संस्मरणों को पुरस्कृत किया गया है। प्रत्येक विजेता को 31 मार्च को आयोजित होने वाले समारोह में उत्कीर्ण तांबे की पट्टिका, शाल और एक लाख रुपये की सम्मान राशि प्रदान की जाएगी।

क्षेत्रीय भाषाओं की महक और विविधता का उत्सव

भारत की भाषाई संपन्नता को रेखांकित करते हुए बांग्ला (श्रेष्ठ कविता) में प्रसून बंद्योपाध्याय, गुजराती (भट्टखडकी) में योगेश वैद्य और कन्नड़ (दादा सीरिसु तांडे) में अमरेश नुगदोनी को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए चुना गया है। राजस्थानी में जितेंद्र कुमार सोनी की कृति 'भरखामा' और पंजाबी में जिन्दर की 'सेफ्टी किट' ने अपनी विशेष पहचान बनाई है।

देश की नींव कमजोर कर रही जातिवाद की राजनीति

- सीएम योगी बोले- जाति व्यवस्था समाज को संगठित करने के लिए
- पिछली सरकारों ने जाति व भाषा के नाम पर बांटने का किया काम

नईदुनिया ब्यूरो, जयपुर : उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जाति व्यवस्था समाज को संगठित करने के लिए है। जातिवाद सामाजिक ढांचे को कमजोर करता है और देश को बांटता है। सीएम योगी ने यह भी कहा कि धर्म को समाज में एकता की शक्ति के रूप में कार्य करना चाहिए। जाति समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने का साधन होना चाहिए, लेकिन जातिवाद उस व्यवस्था को कमजोर करता है। पिछली सरकारों ने जाति, क्षेत्र व भाषा के नाम पर लोगों को बांटने का काम किया, जिससे देश कमजोर हुआ। कश्मीर में अशांति, भाषाई विवाद और जातिगत संघर्ष जैसी चुनौतियां पैदा हुईं। शासन के लाभ अक्सर दलितों, गरीबों और अन्य हाशिए पर पड़े वर्गों तक नहीं पहुंच पाए। सीएम योगी राजस्थान के जालोर में कनकांचल पहाड़ी पर स्थित रत्नेश्वर महादेव मंदिर की 375वीं वर्षगांठ पर आयोजित महायज्ञ में शामिल हुए। इस दौरान एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि जिन्होंने प्रभु राम के अस्तित्व को नकार दिया। राम ने उन्हें पूरी तरह से नकार दिया।

डाक विभाग की '24 स्पीड पोस्ट' सेवा आज से शुरू

नई दिल्ली, एजेंसी : डाक विभाग ने सोमवार को कहा कि वह एक नई एक्सप्रेस सेवा के तहत 24 घंटे के भीतर पार्सल और सामान की डिलीवरी करेगा। '24 स्पीड पोस्ट' नाम की यह सेवा आज यानी मंगलवार को लांच की जाएगी। इस सेवा के तहत तत्काल और समय को लेकर संवेदनशील सामानों के लिए अगले दिन गारंटीड डिलीवरी की जाएगी। केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और संचार राज्य मंत्री डा. चंद्र शेखर पेम्मसानी आकाशवाणी दोपहर 12:30 बजे इस सेवा की शुरुआत करेंगे। '24 स्पीड पोस्ट' सेवा का उद्देश्य महानगरों में एक्सप्रेस लाजिस्टिक्स सेवाओं में सुधार करना है। पहले चरण में यह सुविधा छह मेट्रो शहरों- दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, बेंगलुरु और हैदराबाद में उपलब्ध होगी।

संघ प्रमुख ने प्रचार प्रमुखों के साथ की संगठन के कार्य विस्तार पर चर्चा

नईदुनिया ब्यूरो, पानीपत : हरियाणा के समालखा में माधव सृष्टि परिसर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डा. मोहन भागवत ने सोमवार को 46 प्रांत प्रचारकों और उनके सहयोगियों के साथ बैठक की। इसमें संगठन की वर्तमान गतिविधियों, आगामी कार्यक्रमों और कार्य विस्तार को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। भागवत ने पदाधिकारियों से कहा कि वे प्रतिनिधि सभा के निर्णयों को शाखाओं और क्षेत्रों तक लेकर जाएं। शताब्दी वर्ष में शाखाओं की संख्या बढ़ाएं। व्यापक गृह एवं ग्राम संपर्क के साथ-साथ सामाजिक सद्भाव बैठक करें। बैठक में प्रांत प्रचारकों ने अपने अनुभव साझा किए। संघ के कार्यों की दिशा और प्राथमिकताओं पर भी विचार-विमर्श किया गया। विभिन्न प्रांतों में चल रही शाखाओं, सेवा कार्यों तथा सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी गई। प्रांत प्रचारकों ने अपने क्षेत्रों के अनुभव और सुझाव भी रखे, जिनके आधार पर आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पर चर्चा भी हुई। बैठक के बाद प्रांत प्रचारक लौट गए। वहीं, मंगलवार को संघ प्रमुख मोहन भागवत क्षेत्र प्रचारकों के साथ बैठक करेंगे।

माधव सृष्टि में सरसंघचालक डा. मोहन भागवत। ● नईदुनिया आर्काइव

इच्छामृत्यु संग हरीश राणा के अंगदान का संकल्प

नईदुनिया ब्यूरो, नई दिल्ली : इच्छामृत्यु के लिए एम्स में भर्ती गाजियाबाद के हरीश राणा के अंगदान के संकल्प के अनुसार एम्स की मेडिकल टीम उनके अंगों की विस्तृत चिकित्सीय जांच कर रही है। जांच में तय होगा कि कौन-कौन से अंग प्रत्यारोपण के लिए उपयुक्त हैं। इसके बाद आपसी सहमति से अंगों का प्रत्यारोपण जरूरतमंद मरीजों को किया जाएगा। माता-पिता निर्मला देवी और अशोक राणा ने हरीश की मृत्यु के बाद उनके अंगदान का संकल्प लिया था, ताकि उनकी जीवनयात्रा समाप्त होने के बाद जरूरतमंद मरीजों को नया जीवन मिल सके।

किडनी, लिवर, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय व आंत का हो सकता है दान : विशेषज्ञों के अनुसार, हरीश के मामले में परिवार द्वारा अंगदान का संकल्प जताए जाने के बाद अब यह एम्स की मेडिकल टीम की जांच पर निर्भर करेगा कि उनके शरीर के कौन-कौन से अंग प्रत्यारोपण के लिए उपयुक्त हैं। सूत्रों के अनुसार, कार्यशील पाए जाने पर हरीश की किडनी, लिवर, हृदय, फेफड़े, अग्न्याशय और आंत जैसे अंगों के दान पर विचार हो रहा है। वहीं, लाइफ सपोर्ट हटाने की प्रक्रिया एम्स चिकित्सकों की निगरानी में जारी है। विशेषकर फीडिंग ट्यूब (क्लिनिकली असिस्टेड न्यूट्रीशन और हाइड्रेशन) और ट्रेकियोस्टामी यानी ब्रीदिंग ट्यूब को हटाया जा चुका है।

हरीश राणा की स्वस्थ अवस्था का फोटो और दूसरे चित्र में अस्पताल में बेटे के पास पिता। ● इंटरनेट मीडिया

पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ फिल्म समेत छह छह पुरस्कार जीते, 'सिनर्स' ने अपने नाम किए चार पुरस्कार

आस्कर पुरस्कारों में 'वन बैटल आफ्टर अनदर' का दबदबा

लास एंजिलिस, एजेंसी : 98वें आस्कर पुरस्कारों में पाल थामस एंडरसन की फिल्म 'वन बैटल आफ्टर अनदर' का जलवा रहा। इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म समेत छह पुरस्कार अपने नाम किए। जबकि हालीवुड अभिनेता माइकल बी जार्डन को फिल्म 'सिनर्स' में उनके दमदार अभिनय के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार प्रदान किया गया। अभिनेत्री जेसी बकले को फिल्म 'हैमनेट' में बेहतरीन अदाकारी के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार मिला।

लास एंजिलिस के डाल्बी थिएटर में रविवार को 98वें अकादमी पुरस्कार समारोह आयोजित किया गया। आस्कर पुरस्कारों में 'वन बैटल आफ्टर अनदर' का दबदबा देखने को मिला। इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म, सर्वश्रेष्ठ निर्देशक और सर्वश्रेष्ठ पटकथा समेत कुल छह पुरस्कार जीते हैं। सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार लेने के बाद फिल्म के निर्देशक एंडरसन ने कहा, 'मैंने यह फिल्म अपने बच्चों के लिए लिखी है ताकि उस दुनिया में फैली अव्यवस्था के लिए माफी मांग सकूं, जिसे हम उन्हें सौंप रहे हैं।' एंडरसन के लिए यह पहला आस्कर पुरस्कार है। 'वन बैटल आफ्टर अनदर' एक क्राइम-थ्रिलर फिल्म है, जो एक पूर्व क्रांतिकारी बाब की कहानी है। वह 16 साल बाद लौटे अपने पुराने दुश्मन कर्नल लाकजा से अपनी बेटी विला को बचाने के लिए खतरनाक संघर्ष करता है। यह फिल्म कुल 14 श्रेणियों में नामांकित की गई थी। जबकि 'सिनर्स' को रिकार्ड 16 श्रेणियों में नामांकिया गया था। इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ अभिनेता समेत चार पुरस्कार जीते हैं। जार्डन सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार जीतने वाले छठे अश्वेत अभिनेता हैं।

लास एंजिलिस में रविवार को आस्कर पुरस्कार समारोह के दौरान प्रियंका चोपड़ा के साथ जेवियर बार्डेम। ● रायटर

प्रियंका चोपड़ा का दिखा जलवा

आस्कर पुरस्कार समारोह के दौरान अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा का जलवा देखने को मिला। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय फीचर फिल्म का पुरस्कार प्रदान किया। वह करीब एक दशक बाद आस्कर के मंच पर नजर आईं। उन्होंने सफेद गाउन पहना था। समारोह में उद्योगपति मुकेश अंबानी की बेटी ईशा अंबानी अपने पति आनंद पीरामल के साथ शामिल हुईं।

नहीं किया गया धर्मेंद्र को याद : लास एंजिलिस के डाल्बी थिएटर में रविवार को 98वें अकादमी पुरस्कार समारोह में बालीवुड के दिग्गज अभिनेता धर्मेंद्र का उन दिवंगत हस्तियों में नाम शामिल नहीं था, जिन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पिछले वर्षों की तुलना में इस बार समारोह का श्रद्धांजलि वाला हिस्सा 15 मिनट ज्यादा चला, लेकिन इसमें धर्मेंद्र का जिक्र नहीं था। उनका गत नवंबर में निधन हो गया था।

गाजा में शांति के लिए लगे नारे : समारोह के दौरान कुछ कलाकारों ने फलस्तीन की स्वतंत्रता और गाजा में शांति के समर्थन में नारे लगाए। अभिनेता जेवियर ने कहा, 'युद्ध नहीं और फलस्तीन को आजाद करो।'

पंजाब नैशनल बैंक punjab national bank

आस्ति वसुली प्रबंधन शाखा
अरेरा हिल्स, भोपाल, फोन नं. 0755-2550020

अचल संपत्ति के विक्रय हेतु विक्रय नोटिस

प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम 8 (6) के परन्तुक के साथ पठित वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अधीन अचल आस्तियों के विक्रय हेतु **ई-नीलामी विक्रय नोटिस** आम लोगों को और विशेष रुप से उधार लेने वाला और प्रत्याभूतिदाता को यह नोटिस दिया जाता है कि नीचे वर्णित अचल सम्पत्ति जो प्रतिभूत लेनदार के पास गिरवी/प्रभारित है, का प्रलक्षित/वास्तविक कब्जा / सांकेतिक कब्जा (इनमें से जो भी लागू होता हो) प्रतिभूत लेनदार के सुरक्षित ऋणदाता द्वारा लिया गया है, को 'जहां है जैसा है और जो कुछ भी है' के आधार पर निम्नलिखित ऋणियों एव जमानतदारों से बैंक / प्रतिभूत लेनदार की निम्नलिखित रुपए की बकाया राशि की वसूली हेतु निम्न दिनांक को बेचा जाएगा। आरक्षित मूल्य एवं अग्रिम धनराशि निम्नलिखित है:-

ई नीलामी दिनांक : 22.04.2026
(ई-नीलामी का समय: प्रात: 11.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक प्रत्येक 10 मिनिट के असिमित विस्तार के साथ)
ईएमडी जमा करने की अंतिम तिथि : 21.04.2026 रात्रि 11.00 बजे तक

ऋणी/बंधनकर्ता का नाम एवं बंधक संपत्ति का विवरण	आरक्षित मूल्य / धरोहर राशि	मांग पत्र दिनांक / कब्जा दिनांक / बैंक को देय राशि
निविदाकार अपने प्रस्ताव रु. 25000/- (रु. पच्चीस हजार मात्र) के गुणांक में बढ़ा सकेंगे। प्राधिकृत अधिकारी : श्री बिनीत कुमार | फोन नं. 0755-2550020/9557822211		
मैसर्स. माँ पीताम्बरा स्टोन क्रशर (सांकेतिक आधिपत्य) श्री देवेन्द्र सिकरवार पुत्र श्री फूल सिंह (जाति) सिकरवार ठाकुर की संपत्ति-भू-सर्वे क्रं. 1658 और वर्तमान भू-सर्वे क्रं. -1658/मिन 9 के भाग पर स्थित-आवासीय संपत्ति, नगर निगम मकान नं.-1085, वार्ड नं.-35 (पुराना) और वार्ड नं. 8 (नया), स्थित-महाराणा प्रताप नगर, पीएसयू कॉलेज के सामने, जौरा खुर्द, जिला- मुरैना (म.प्र.)-476001, कुल क्षेत्रफल- 1000 वर्गफुट (92.93 वर्ग मीटर), चतुरसीमाएँ: पूर्व-श्री दीना की संपत्ति, पश्चिम- श्री भोटाराम की संपत्ति, उत्तर- श्री विजय सिंह की खेत, दक्षिण- 20 फीट चौड़ा रास्ता।	(₹) 23,18,000/- / (₹) 2,31,800/-	18.07.2025 / 18.11.2025 / रु. 1,76,60,831.56 30.05.2023 को देय + ब्याज व अन्य खर्चे
श्री पवन सिंह पुत्र श्री विजय सिंह (जाति) गुर्जर ठाकुर की संपत्ति-भू-सर्वे क्र. -419 और वर्तमान भू-सर्वे क्र. 419 / मिन 41 के भाग पर स्थित-आवासीय संपत्ति, नगर निगम मकान क्र.-1343, वार्ड क्रं.-37 (पुराना) एवं वार्ड क्रं. 12 (नया), कमिश्नर क्वार्टर के पीछे, इंद्रा कॉलोनी, दुर्गापुरी कॉलोनी, मुरैना (म.प्र) -476001, कुल क्षेत्रफल 1500.00 वर्गफीट (139.42 वर्गमीटर), चतुरसीमाएँ: पूर्व- श्री ज्ञान सिंह का प्लॉट, पश्चिम: विक्रेता की भूमि, उत्तर-18 फीट चौड़ा रास्ता प्रस्तावित, दक्षिण- 18 फीट चौड़ा रास्ता प्रस्तावित। (सांकेतिक आधिपत्य)	(₹) 55,44,000/- / (₹) 5,54,400/-	

नियम एवं शर्ते :- 1. विक्रय सुरक्षा हित (प्रवर्तन) नियम, 2002 के नियम व शर्तों के आधीन होगा तथा निम्नलिखित शर्तों का पालन करना होगा। 2. सम्पत्तियों की बिक्री "जहां है जैसा है एवं जिस अवस्था में है" के आधार पर होगी। 3. ऊपर वर्णित सम्पत्तियों का विवरण सुरक्षित ऋणदाता को प्राप्त जानकारी के आधार पर है। किन्तु सुरक्षित ऋणदाता किसी भी त्रुटि, गलत जानकारी, घोषणा में चूक लिये जिम्मेदार नहीं होगा। 4. विक्रय अधिकृत ऑनलाईन ई-निलामी सेवा प्रदाता के द्वारा **22/04/2026** को वेबसाइट https://baanknet.com पर किया जायेगा। इच्छुक बोली लगाने वाले / खरीददारों को नीलामी के उचित समय से पहले बैंक से मान्यता प्राप्त सेवा प्रदाता PSB Alliance के संबंधित ई-नीलामी वेब पोर्टल https://baanknet.com में रजिस्ट्रेशन कर अपने ग्लोबल ईएमडी वॉलेट में ऑनलाईन मोड का उपयोग करके ईएमडी राशि को ट्रांसफर करना होगा। यदि ग्लोबल ईएमडी वॉलेट में ईएमडी राशि उपलब्ध नहीं है, तो सिस्टम बोली लगाने की अनुमति नहीं देगा। बिक्री की विस्तृत नियम व शर्तों के लिए https://baanknet.com & www.pnb.bank.in पर देखें।

दिनांक: 16.03.2026 स्थान: भोपाल **सुरक्षित ऋणदाता, पंजाब नैशनल बैंक**